संस्कृति मन्त्रालय
भारत सरकार

आज़ादी का अमृत महोत्सव

इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र
Indira Gandhi National Centre for the Arts

इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र

संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार का एवं स्वायत्तशासी न्यास

क्षेत्रीय शाखा, राँची

विशेष व्याख्यानमाला के अंतर्गत

आजादी के अमृत महोत्सव के तत्वावधान में

विषयः झारखण्ड में राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी (1917–1940)

व्याख्यान में आपको सादर आमंत्रित करता है।

वक्ता

श्री भैरवलाल दास
प्रख्यात गाँधीवादी दर्शन विद्वान

अध्यक्षता

डॉ. मधु सिंह
आचार्य, अंग्रेजी एवं युरोपीयन भाषा विभाग
लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ

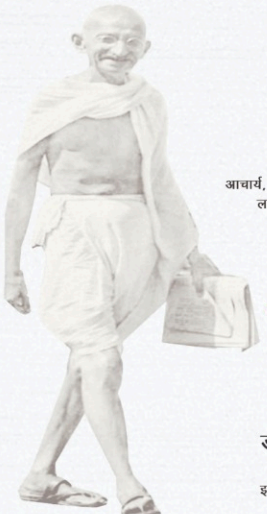

परिचय एवं समन्वयन

डॉ. कुमार संजय झा
क्षेत्रीय निदेशक
इ.गा.रा.कला केन्द्र, राँची

धन्यवाद प्रस्ताव

डॉ. मनोज कुमार
परियोजना सहायक
इ.गा.रा.कला केन्द्र, नई दिल्ली

अवधारणा

महात्मा गांधी का वर्तमान झारखंड के साथ अत्यंत अपनत्व भाव था। वे इस धरती से और विशेष रूप से आदिवासियों के जीवन एवं संस्कृति से अत्यंत प्रगाढ़ संबंध रखते थे। 1915 ई. में दक्षिण अफ्रीका से भारत वापस आने के बाद से लेकर 1940 ई. तक वे झारखंड की धरती पर कम से कम बारह बार आए। ताना भगत की जीवन दर्शन एवं उनकी संस्कृति से गांधीजी प्रभावित हुए। गांधीजी ने स्वीकार किया कि ताना भगतों ने भारत को एक नई राह दिखाई है। सनातन धर्म के प्रमुख अवयवों को ताना भगतों ने अंगीकार किया है। जिनमें मातृभूमि के प्रति समर्पण है, मानव आजादी है, अनावश्यक प्रताड़नाओं के प्रति प्रतिरोध भी है। गांधीजी ने कई अवसरों पर आदिवासी संस्कृति में व्याप्त मानव कल्याण के तत्वों की प्रशंसा किया है। रामगढ़ कांग्रेस के अति महत्वपूर्ण राजनीतिक कार्यों को छोड़कर गांधीजी आदिवासियों से मिलने के लिए 'बीरो' निकल पड़े थे। झारखंड समाज ने भी गांधीजी के विचार एवं दर्शन से प्रभावित होकर उनके संघर्षों में साथ दिया है।

वक्ता

बिहार विधान परिषद् में परियोजना अधिकारी के पद पर कार्यरत भैरव लाल दास ने अपनी शिक्षा ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा से प्राप्त किया है। महात्मा गांधी पर शोध एवं प्रकाशन इनका प्रिय विषय रहा है। 'महात्मा गांधी के चम्पारण आंदोलन के सूत्रधार–राजकुमार शुक्ल की डायरी, चम्पारण में गांधी की सृजन यात्रा, तिनकठिया, महात्मा गांधी के तीसरे गुरु–पंडित राजकुमार शुक्ल नामक पुस्तकों के रचयिता भैरव लाल दास की अब तक एक दर्जन से अधिक पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। महात्मा गांधी के चम्पारण सत्याग्रह विषय पर इन्होंने लगभग 90 भाषण दिया है। पटना दूरदर्शन के लिए तीन वृत्तचित्र, बिहार सरकार के सूचना एवं जन संपर्क विभाग के लिए एक लघु फिल्म सहित दूरदर्शन एवं आकाशवाणी पर कार्यक्रमों की शृंखलाएं तैयार किया है।

अध्यक्ष

मधु सिंह अंग्रेजी एवं आधुनिक युरोपीय भाषा विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय में आचार्य है। प्रो. सिंह कि रूचि अनुवाद, तुलनात्मक साहित्य एवं औपनिवेशिक अभिलेख अध्यन है। उन्होने केवल भारत के शोध जर्नलों में अपितु युरोप एवं अमेरिकी शोध जर्नलों में भी शोध लेख प्रकाशित किया। प्रो. सिंह ने भारत के प्रतिष्ठित संस्थानो एवं युरोप समेत कई अमेरिकी संस्थानों में भी महत्व पूर्ण व्याख्यान दिये।

प्रकाशित पुस्तके :
1. घुमंतू हैं चोर नहीं
2. The Languages of Chattisgarh
3. Miss Samuel: A Jewish Saga

वर्तमान में डॉ. सिंह भारत में महामारी नामक पुस्तक पर काम कर रही है।

दिनांक : 02 अक्टूबर, 2021 समय : 04:00 अपराह्न

वेबिनार के लिए अग्रिम पंजीकरण करें
https://us02web.zoom.us/webinar/register/WN_Nm541VXTQ-CGwyXF43P5Gw